रागी तन्दीरा

(भाषा: कन्नड)

राग: अहीर भैरव; ताल: आदि

रचयिता: श्री पुरन्दरदासरु

मनशुद्धि इल्लदवगे मन्त्रद फलवेनु

तनु शुद्धि इल्लदवगे तीर्थद फलवेनु

मिन्दल्लि फलवेनु मीनु मोसलेयन्ते

मिन्दल्लि फलवेनु श्री शैलद काकियन्ते

होरगे मिन्दु ओलगे मीयदवर कन्डु

बेरगागि नगुतिद्द पुरन्दर विट्ठल

पल्लवी

रागी तन्दीरा भिक्षके रागी तन्दीरा भिक्षके

रागी तन्दीरा भिक्षके रागी तन्दीरा

अनुपल्लवी

योग्य रागी भोग्य रागी भाग्यवन्तरागी नीवु (२) ॥रागी तन्दीरा॥

चरण १

अन्न दानव माडुवरागी अन्न छत्रवनिट्टवरागी (२)

अन्य वार्तेगल बिट्टवरागी (२)

अनुदिन भजनेय माडुवरागी ॥रागी तन्दीरा॥

चरण २

माता पितृगल सेविपरागी पातक कार्यव बिट्टवरागी (२)

जातियलि मिगिलादवरागी (२)

नीति मार्गदलि ख्यातरागी ॥रागी तन्दीरा॥

चरण ३

गुरु कारुण्यव पडेदवरागी । गुरुविन मर्मव तिलिदवरागी ॥ (२)

गुरुविन पादव स्मरिसुवरागी । (२)

परम पुण्यव माडुवरागी ॥रागी तन्दीरा॥

चरण ४

सिरि रमणन सदा स्मरिसुवरागी । गुरुविगे बागोरन्तवरागी ॥ (२)

करेकरे संसार नीगुवरागी । (२)

पुरन्दर विट्ठलन सेविपरागी ॥रागी तन्दीरा॥